20 झाँसी की रानी

1857 की क्रांति भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अविस्मरणीय अध्याय है। ब्रितानी हुकूमत से विद्रोह का विस्तार समाज के हर तबके तक हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान की यह कविता 'झांसी की रानी' के जीवन वृत्त, संघर्ष और विद्रोह से हमारा ओजपूर्ण साक्षात्कार कराती है। आम भारतीयों की जुबान पर बसी यह कविता प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाती है।

P4L6HL

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता का वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों की वार
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना ख़ूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवाड़,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई ख़ुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किन्तु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

नि:संतान मरे राजाजी।
रानी शोक-समानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर पर भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात,
जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था बज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लैफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

जख़्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अज़ब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अँग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अँग्रेजों के मित्र सिन्धिया
ने छोड़ी राजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अँग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मुंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे ह्यूरोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे होने लगे वार-पर-वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

– सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

भृकुटी	–	भौं
फिरंगी	–	अंग्रेज
मर्दानी	–	विरांगना, बहादुर स्त्री
खिलवाड़	–	खेल
सुभट	–	दक्ष, निपुण
विरुदावलि	–	विस्तृत यशोगान
नि:संतान	–	बिना संतान के
लावारिस	–	देखभाल नहीं करने वाला
वारिस	–	औलाद, संतान
अश्रुपूर्ण	–	आँसू से भरा हुआ
विरानी	–	सूनी
द्वंद्व	–	युद्ध
मनुज	–	मनुष्य

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. ''बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी''
उपर्युक्त पंक्ति में भारत को ''बूढ़ा'' कहा गया है, क्योंकि
(क) भारत गुलाम था।
(ख) भारत में एकता नहीं थी।
(ग) भारत का इतिहास प्राचीन है।
(घ) भारत की दशा शिथिल और जर्जर हो चुकी थी।

2. लक्ष्मीबाई का बचपन किस प्रकार के खेलों में बीता?
3. ''हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में''
उपर्युक्त पंक्ति में 'वीरता' और 'वैभव' का संकेत किस-किस की ओर है?

पाठ से आगे

1. इस कविता के आधार पर कालपी-युद्ध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. **भाव स्पष्ट कीजिए**
(क) गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी।
(ख) हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी।
3. इस कविता से लक्ष्मीबाई से संबंधित कुछ पंक्तियाँ चुनकर उनके आधार पर रानी की वीरता का वर्णन कीजिए।
4. नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिनमें पद्य-भाषा को गद्य-भाषा में लिखा गया है:

पद्य की भाषा : चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
गद्य की भाषा : वह पुरानी तलवार सन् सत्तावन में चमक उठी थी।
पद्य की भाषा : बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।
गद्य की भाषा : फिर से बूढ़े भारत में भी नई जवानी आई थी।

नीचे दी गई कविता की कुछ पंक्तियों को आप भी गद्य की भाषा में लिखिए।

पद्य-भाषा : बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
गद्य-भाषा : .....
पद्य-भाषा : वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थी।
गद्य-भाषा : .....

गतिविधि

1. प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख वीरों की चित्रावली बनाकर प्रत्येक चित्र के साथ उसका संक्षिप्त परिचय कीजिए।
2. प्रथम भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के क्या कारण थे? अध्यापक से ज्ञात कीजिए।
3. पाठ में आए पात्रों के बीच हुए संवाद को अपनी भाषा में लिखिए तथा अभिनय कीजिए।